नवभारत
| संस्थापक : स्व. रामगोपाल माहेश्वरी | प्रेरणा स्त्रोत : स्व. प्रफुल्ल माहेश्वरी |

जीएसटी सुधार आम उपभोक्ता तक पहुंचें

वस्तु एवं सेवा कर (जीएसटी) में हाल ही में किए गए सुधारों को लागू हुए चार दिन हो चुके हैं. प्रारंभिक संकेत उत्साहवर्धक हैं–अधिकांश वस्तुओं की कीमतों में गिरावट आई है और आम उपभोक्ता ने राहत की सांस ली है. लेकिन यह तस्वीर पूरी तरह संतुलित नहीं है. कुछ ऐसे क्षेत्र हैं जहां सुधारों का लाभ उपभोक्ता तक नहीं पहुंच पा रहा, और मेडिकल सेक्टर इसकी सबसे बड़ी मिसाल है. दवाइयों के दाम न केवल जस के तस बने हुए हैं बल्कि कुछ निर्माताओं द्वारा जानबूझकर बढ़ोतरी करने की खबरें भी सामने आई हैं. यह स्थिति उन आम नागरिकों के लिए गहरी चिंता का विषय है जिनका स्वास्थ्य खर्च पहले ही आय का बड़ा हिस्सा निगल जाता है.

भारत की औषधि उद्योग दुनिया का तीसरा सबसे बड़ा उद्योग है और लगभग 42 अरब डॉलर का बाजार रखता है. यहां जेनेरिक दवाओं का हिस्सा सबसे अधिक है, फिर भी उपभोक्ताओं तक सस्ती दवाइयां पहुंचना कठिन बना हुआ है. कारण है–निर्माताओं और विक्रेताओं की मनमानी तथा सरकार की निगरानी प्रणाली का कमजोर होना. यदि जीएसटी सुधार का असली फायदा उपभोक्ता को मिलना है तो केंद्र और राज्य सरकारों को मिलकर दवा उद्योग पर सख्त निगरानी करनी होगी. खास तौर पर यह देखना होगा कि टैक्स घटने का लाभ सीधे एमआरपी में परिलक्षित हो. मेडिकल क्षेत्र को छोड़ दें तो अधिकांश क्षेत्रों में जीएसटी सुधारों का सकारात्मक असर दिख रहा है. रसोई गैस, इलेक्ट्रॉनिक्स, कपड़े और फर्नीचर जैसे सामानों की कीमतों में कमी से उपभोक्ता मांग बढ़ी है. खुदरा बाजार में लेनदेन में लगभग 8-10 फीसदी की वृद्धि दर्ज की गई है. यह एक संकेत है कि उपभोक्ता खर्च बढ़ने से अर्थव्यवस्था की गति तेज हो सकती है.

भारत की अर्थव्यवस्था फिलहाल चुनौतीपूर्ण वैश्विक परिस्थितियों का सामना कर रही है. अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष (आईएमएफ) के ताजा अनुमान के अनुसार वित्त वर्ष 2025-26 में भारत की विकास दर 6.5 फीसदी रहने की संभावना है, जो विश्व की प्रमुख अर्थव्यवस्थाओं में सबसे अधिक है. अमेरिकी संरक्षणवाद और उच्च टैरिफ नीतियों के कारण वैश्विक व्यापार पर असर पड़ा है, लेकिन जीएसटी सुधारों ने घरेलू स्तर पर एक सकारात्मक माहौल तैयार किया है. यह सुधार भारत को आंतरिक उपभोग पर आधारित विकास मॉडल की ओर ले जा रहा है, जहां घरेलू मांग विदेशी दबावों का संतुलन कर सके. जीएसटी सुधार का दूसरा बड़ा फायदा छोटे और मझोले उद्योगों (एमएसएमई) को हुआ है. टैक्स ढांचे को सरल बनाने और इनपुट टैक्स क्रेडिट को सुगम बनाने से उनकी लागत घट रही है. यदि ये लाभ उपभोक्ता तक लगातार पहुंचते रहें, तो बाजार में प्रतिस्पर्धा भी बढ़ेगी और मुनाफाखोरी की गुंजाइश कम होगी. हालांकि यह नहीं भूलना चाहिए कि सुधार तभी सार्थक होंगे जब पारदर्शिता और निगरानी का मजबूत तंत्र खड़ा हो. यदि दवा जैसी आवश्यक वस्तुओं में उपभोक्ताओं को राहत नहीं मिलेगी तो सुधार अधूरे साबित होंगे. केंद्र सरकार को 'नेशनल एंटी-प्रॉफिटियरिंग अथॉरिटी' जैसे संस्थानों को और सशक्त बनाना चाहिए ताकि कोई भी उद्योग जीएसटी में कटौती का लाभ उपभोक्ताओं से छिपा न सके.

कुल मिलाकर, जीएसटी सुधारों ने अर्थव्यवस्था में नई ऊर्जा भरी है और उपभोक्ताओं के बीच विश्वास जगाया है. अब जिम्मेदारी सरकार की है कि वह इस भरोसे को बनाए रखे और सुनिश्चित करे कि सुधारों का लाभ हर क्षेत्र और हर नागरिक तक पहुंचे. खासकर दवा उद्योग में पारदर्शिता और सख्त नियंत्रण की दिशा में कदम उठाना अनिवार्य है. तभी जीएसटी सुधारों को वास्तविक सफलता मानी जाएगी और भारत की अर्थव्यवस्था को अपेक्षित गति मिलेगी.

ट्रंप का 'वीजा' वार, भारत के लिए अवसर

राजीव खण्डेलवाल
लेखक : कर सलाहकार एवं पूर्व बैतूल नगर सुधार न्यास अध्यक्ष हैं

अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने एच-1बी वीजा शुल्क को 100 गुना बढ़ाकर 88 हजार डॉलर से 8-8 लाख डॉलर प्रतिवर्ष करने का आदेश 22 सितंबर से लागू कर दिया है. इस निर्णय से लगभग 3 लाख भारतीय प्रोफेशनल्स प्रभावित होंगे, जो इन वीजा धारकों का लगभग 70 प्रतिशत हैं. यद्यपि सरकार ने यह स्पष्टिकरण दिया है कि यह नए वीजा धारकों पर लागू होगा।

टके की मुर्गी पर छह टके महसूल।

एच-1बी वीजा है क्या?

एच-1बी वीजा अमेरिका का एक गैर-आप्रवासी कार्य वीजा है। यह वहां के नियोक्ताओं को विदेशी प्रोफेशनल्स को स्पेशलाइज्ड फील्ड्स जैसे तकनीक, इंजीनियरिंग, चिकित्सा या विज्ञान में अस्थायी नियुक्ति की अनुमति देता है। इसकी अवधि सामान्यत: 3 वर्ष होती है, जिसे अधिकतम 6 वर्ष तक बढ़ाया जा सकता है। इसकी फीस कर्मचारी नहीं बल्कि नियोक्ता एम्प्लॉयर को देनी होती है।

किसी चराग का अपना मकां नहीं होता जहां रहेगा वहीं रौशनी लुटाएगा

प्रधानमंत्री मोदी ने ट्रंप प्रशासन के उक्त वीजा आदेश जारी होने के 24 घंटे के भीतर गुजरात के भावनगर में कहा था- हमारा सबसे बड़ा दुश्मन है, दूसरों पर निर्भरता। हमें आत्मनिर्भर बनना ही पड़ेगा। प्रधानमंत्री के उक्त कहे गए कथन को इसी (वीजा वार के) संदर्भ में देखा जाए तो ट्रंप का यह वीजा बम भारत को अवसर तलाशने की दिशा में प्रेरित करता है।
मोदी का नारा: एमआईजीए- मेक इंडिया ग्रेट अगेन।
ट्रंप का जवाब: एमएजीए -मेक अमेरिका ग्रेट अगेन।

यानी की खेती पीछे, हकीम लगान पहले मांगे।

अब सवाल है

क्या कोई भी अमेरिकी कंपनी अपने एक कर्मचारी के लिए इतनी भारी राशि खर्च करेगी? या फिर वर्क फ्रॉम होम और आउटसोर्सिंग का विकल्प चुनेगी?

वेल डन ट्रंप क्यों?

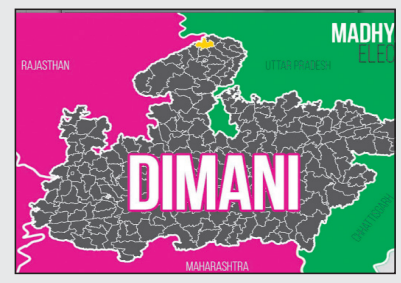

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने देश को विकसित राष्ट्र बनाने के लिए दो मुख्य नीतियों को आधार बनाया है। यद्यपि **कदली और कांटों में दोस्ती संभव नहीं,** लेकिन दोस्त नरेंद्र मोदी की अपना हाथ जगन्नाथ की नीति का राष्ट्रपति ट्रंप ने भी अमेरिका फर्स्ट और प्रोजेक्ट फायरवॉल के तहत अनुसरण करते हुए शुल्क बढ़ाने का फैसला किया है। इससे दोनों देशों को लाभ होगा। भारत की दृष्टि से यह निर्णय कई मायनों में फायदेमंद हो सकता है। यदि आपदा में अवसर खोजने में माहिर भारत सरकार अवसर का लाभ उठाकर दीर्घकालीन नीति बनाएगी तो? वैसे वैसे भी हमारा देश मजबूरी का नाम महात्मा गांधी की नीति से चलता है। उक्त निर्णय का एक प्रभाव भारत की प्रतिभा और बौद्धिक कौशल का उपयोग अमेरिका की बजाय अपने देश में हो सकेगा, जिसका उपयोग अभी तक सस्ती लागत पर अमेरिका की टेक कंपनियां उपयोग कर रही थी। भारत सरकार को मजबूर होना पड़ेगा कि वह इन प्रोफेशनल्स स्वदेशी प्रतिभाएं, जिनसे

स्वदेशी माल का उत्पादन भी हो सकता है, के लिए देश के भीतर ही काम करने के अवसर और परिस्थितियां बनाए। इससे आत्मनिर्भर भारत और स्वदेशी की दिशा में बड़ा कदम आगे बढ़ेगा। लगभग 3 लाख प्रभावित प्रोफेशनल्स और उनके परिवारों के 8 लाख लोगों के लिए नई नीतियां और रोजगार अवसर विकसित होंगे। प्रतिभा किसी की बपौती नहीं होती। जैसा कि वसीम बरेलवी ने कहा है- यदि बारीकी से देखा जाए तो दोनों देशों की नीतियां अब एक-दूसरे की आर्थिक आत्मनिर्भरता को बल दे रही हैं। ट्रंप को भी अपने देश के भीतर प्रतिभाओं का विकास करना होगा। स्थानीय रोजगार के अवसर बढ़ेंगे और आउटसोर्सिंग पर जो धन व्यय हो रहा था, वह रुक जाएगा।

ट्रंप का यह वीजा निर्णय पहली नजर में कठोर और भारत विरोधी लगता है, लेकिन गहराई से देखें तो आविष्कार की आवश्यकता ही जननी है।

!! वाह ट्रंप! धन्यवाद ट्रंप!! वेल डन ट्रंप!!!

ग्वालियर चंबल डायरी

प्रियंका की नजर दिमनी पर, मिशन 28 के लिए बनाएंगी टैस्ट लैब

हरीश दुबे

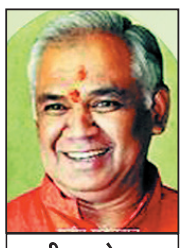

चंबल के बीहड़ों में दूरदराज बसी दिमनी विधानसभा सीट एकदम से देश की हाईप्रोफाइल सीटों में शुमार हो गई है. हालांकि विधानसभा अध्यक्ष का चुनाव क्षेत्र होने के कारण यह मप्र के चुनावी नक्शे पर पहले से ही महत्वपूर्ण सीट बनी हुई थी लेकिन अब दिमनी ने पूरे देश का ध्यान खींचा है. वजह यह कि प्रियंका गांधी देश की जिन चुनिंदा 5 विधानसभा सीटों पर हर बूथ मजबूत कार्यक्रम शुरू करने जा रहीं हैं, उनमें दिमनी भी शुमार है. देश के पांच राज्यो में एक-एक विधानसभा सीटों को इस प्रोग्राम के लिए चुना गया है.

मप्र की कुल 230 विधानसभा सीटों में से दिमनी को छांटा गया है. दिमनी से अभी मप्र विधानसभा के अध्यक्ष नरेन्द्र सिंह तोमर विधायक हैं. नरेंद्र सिंह मप्र भाजपा के दो बार अध्यक्ष, चुनाव प्रभारी एवं केंद्र व राज्य सरकारों में वजनदार महकमों के मिनिस्टर रह चुके हैं. दिमनी जीतने के लिए प्रियंका गांधी द्वारा तैयार ब्लूप्रिंट के बारे में अब तक जो पता चला है, उसके तहत विधानसभा क्षेत्र में 20-20 बूथों के कलस्टर बनाए जाएंगे. हर कलस्टर पर बूथ रक्षक नियुक्त किया जाएगा. बूथ रक्षक को प्रियंका गांधी की टीम ट्रेनिंग देंगी. बूथ रक्षक अपने कल्स्टर की बूथ समितियों के सदस्यों को गाइड करेगा. बूथ रक्षक ये सुनिश्चित करेंगे कि किस मतदान केन्द्र पर कितने मतदाताओं के नाम गलत जुड़े हुए हैं.

पिछले विधानसभा और लोकसभा चुनाव की वोटर लिस्ट में चुनाव के दो महीने पहले काटे, जोड़े गए नामों का कांग्रेस एनालिसिस करेगी. इस प्रोजेक्ट को प्रियंका गांधी खुद लीड कर रहीं हैं. दरअसल, मुरैना-श्योपुर लोकसभा सीट शुरू से कांग्रेस के प्रभाव वाली मानी जाती रही है. मोदी लहर और लाडली बहना इंपेक्ट में भी मुरैना श्योपुर अंचल में कांग्रेस ने दबदबा बनाए रखा है. अभी की बात करें तो यहां की कुल 8 विधानसभा सीटों में से पांच में कांग्रेस के विधायक हैं, वहीं भाजपा के पाले में केवल तीन विधानसभा सीटें हैं. कमलनाथ के सवा साल छोड़ दें तो प्रदेश में 22 साल से भाजपा की सरकार है लेकिन चंबल क्षेत्र में कांग्रेस की स्थिति मजबूत बनी हुई है. यही वजह है कि प्रियंका गांधी 2028 के लिए यहां की दिमनी सीट को टैस्ट लैब बनाने जा रही हैं.

इसलिए महत्वपूर्ण बन गया अक्टूबर

अक्टूबर का महीना भाजपा और कांग्रेस, दोनों ही पार्टियों के लिए महत्वपूर्ण होने जा रहा है. उम्मीद लगाई जा रही है कि लिफाफों में बंद सूचियां इस महीने बाहर आएंगी. ग्वालियर में कांग्रेस और भाजपा के नए जिलाध्यक्षों ने कार्यकारिणी का प्रपोजल ऊपर तक पहुंचा दिया है. शहर जिला कांग्रेस की कार्यकारिणी पहले नवरात्रि में घोषित करने की तैयारी थी लेकिन भोपाल में हरीश चौधरी के साथ ग्वालियर के नए सदर की मीटिंग में एक प्रोफार्मा भरकर भेजने के निर्देश मिले हैं, प्रोफार्मा में कार्यकारिणी के संभावित चेहरों की जन्मकुंडली भरी जाएगी और फिर ठोक बजाकर नियुक्तियां होंगी.

भाजपा की जिला कार्यकारिणी के लिए तो माथापच्ची चल ही रही है, प्रदेश कार्यकारिणी भी दीवाली बाद आने के आसार हैं. अक्टूबर के दूसरे हफ्ते में निगम मंडलों का कुहासा छटेगा तो आखिरी हफ्ते में राज्य मंत्रिमण्डल का विस्तार और पुनर्गठन भी हो सकता है.

शंकराचार्य की चुनावी पारी, निगाह रामबाग कॉलोनी पर

इधर ग्वालियर शहर कांग्रेस सदर के ओहदे से पंडितजी रुखसत हुए, उधर उनके गुरुदेव शंकराचार्य अविमुक्तेश्वरानंद ने बिहार विधानसभा की सभी सीटों पर चुनाव लड़ने का ऐलान कर दिया. शंकराचार्य बिहार में ही डेरा डाले हुए हैं. उन्होंने यह भी ऐलान कर दिया है कि बिहार के बाद अन्य सूबों में होने वाले चुनावों में भी वे अपने प्रत्याशी मैदान में उतारेंगे. अब नजरें ग्वालियर के उनके परम कांग्रेसी शिष्य पर टिक गई हैं. शंकराचार्य साल में दो तीन दफा होने वाले ग्वालियर प्रवास के दौरान पंडितजी के रामबाग कॉलोनी निवास पर ही ठहरते रहे हैं.

भारतीय युवाओं की जान से खेल रहा रूस

द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान अंग्रेजों ने पंजाब प्रांत के हजारों जवानों को जबरन सेना में भर्ती करने में कोई कसर नहीं छोड़ी थी. उन्हें यूरोप में चल रहे युद्ध के मोर्चे पर अग्रिम पंक्ति में भेजा जाता था जहां वह जर्मन तोपों और मशीनगनों के शिकार होकर मौत के मुंह में चले जाते थे या बुरी तरह विकलांग हो जाते थे. जब दुश्मन की मशीनगनें शांत हो जाती थीं तब पीछे की पंक्तिवाले ब्रिटिश सैनिक आगे बढ़ते थे. तोप और मशीनगनों का शिकार या कैनन फॉडर बनाने का धूर्ततापूर्ण सिलसिला आज भी जारी है, लेकिन एक अलग मोर्चे पर भारत का पुराना मित्र रूस यही कर रहा है. वह अपने देश पहुंचे युवा भारतीयों को धोखे से और उनकी इच्छा के विरुद्ध सेना में भर्ती कर यूक्रेन से लड़ने के लिए भेज रहा है. इस लड़ाई में बड़ी तादाद में रूसी सैनिक मारे जा चुके हैं, तो अब रूस भारतीयों को इस्तेमाल करने में लगा है. उधमसिंह नगर के राकेश कुमार नामक युवक को रूस की सेंट पीटर्सबर्ग यूनिवर्सिटी में प्रवेश मिला, जहां पढ़ने के लिए वह स्टुडेंट वीजा पर वहां पहुंचा, लेकिन उसे रूसी सेना में जबरन शामिल कर डोनबास में ट्रेनिंग देकर यूक्रेन से लड़ने के लिए अग्रिम मोर्चे पर भेज दिया गया, उस युवक ने अपने परिजनों को

रूस की ओर से कहा गया कि उसने अपनी सेना में भारतीयों की भर्ती रोक दी है. रूस भारत से दोस्ती का दावा करता है लेकिन अपने यहां पहुंचे भारतीय युवाओं को ऐसे युद्ध के मैदान में उतार देता है, जिसका भारत से कोई संबंध नहीं है. यह तो इन युवाओं को मौत के मुंह में झोंकना हुआ.

सूचित किया कि उसका पासपोर्ट जब्त कर अधिकृत ई-मेल डिलीट कर दिए गए. इसके पहले भी कितने ही भारतीय युवकों को रूस में ऐसी स्थिति से गुजरना पड़ा. भारत सरकार ने रूस से कहा है कि वह अपनी सेना में दाखिल किए गए सभी भारतीयों को मुक्त कर दे. गत वर्ष यह मुद्दा प्रधानमंत्री मोदी ने 2 बार रूसी राष्ट्रपति पुतिन के सामने उठाया था. इस वर्ष जब रूस-यूक्रेन युद्ध में रूसी सेना में शामिल किया गया 10वां भारतीय मारा गया तो भारत सरकार ने सख्ती से यह मामला उठाया.

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी

निशानेबाज

मोबाइल पर अफवाहों का जाल प्रिंट मीडिया पर अधिक विश्वास

पड़ोसी ने हमसे कहा, आज ऐसे लोगों की पीढ़ी देखी जा रही है जिनसे किसी खबर की चर्चा करो तो तपाक से कहते हैं कि हमें सब मालूम है, मोबाइल पर देख लिया है! इन लोगों को अखबार पढ़ने की रुचि या धैर्य नहीं है. वह खुद को महाज्ञानी समझते हैं और मोबाइल की फेक न्यूज को सच मान लेते हैं. उन्हें अफवाह और सच्चाई का फर्क समझ में नहीं आता. ये लोग गूगल गुरू के चेले होते हैं. इस बारे में आपकी क्या राय है?

हमने कहा, मोबाइल कभी भी समाचार पत्र या प्रिंट मीडिया का विकल्प नहीं हो सकता. ऐसे लोगों को समझाइए कि आईएएस की परीक्षा पास करने वालों ने अपनी सफलता का श्रेय नियमित रूप से अखबार पढ़ने की आदत को दिया है. वहीं करंट अफेयर्स या समसामयिक हलचलों की सही जानकारी मिलती है. इसके अलावा स्थानीय, प्रांतीय, राष्ट्रीय, अंतरराष्ट्रीय समाचार, व्यापार और खेल जगत की खबरें अखबार देता है. समाचार पत्र का ओपीनियन पेज अग्रलेख, लेख तथा व्यंग्यात्मक टिप्पणी से ओतप्रोत रहता है. मैगजीन या फीचर पेज मनोरंजन के साथ तकनीक विज्ञान, धर्म, मौसम, पर्यावरण संबंधी सूचना के साथ रोचक व उपयोगी पठनीय सामग्री प्रदान करते हैं.

पड़ोसी ने कहा, निशानेबाज, हमें पता है कि पत्रकार से लेकर धोबी तक अपनी गाड़ी पर प्रेस लिखवाते हैं. मीडिया पहले सशक्त था लेकिन अब भक्त बनता जा रहा है जो किसी खास नेता की आरती उतारता है.

हमने कहा, निष्पक्ष पत्रकारिता एक धर्म है जिसे निभाने वाले अखबारों की कद्र कीजिए. गाजा जैसे युद्ध क्षेत्रों में कितने ही पत्रकार अपना कर्तव्य निभाते हुए शहीद हुए. याद कीजिए कि लोकमान्य तिलक ने अंग्रेजी में मराठा और मराठी में केसरी नामक अखबार निकाले थे. जवाहरलाल नेहरू ने नेशनल हेराल्ड और कौमी आवाज, डॉ. आंबेडकर ने मूक नायक और बहिष्कृत भारत नामक अखबार निकाले थे. आज भी प्रिंट मीडिया को इलेक्ट्रॉनिक मीडिया से अधिक भरोसेमंद माना जाता है. अखबार या उसकी कतरन आप सहेजकर रख सकते हैं. टीवी या मोबाइल की खबर आपकी नजरों से ओझल हो जाती है. टीवी चैनल एक ही खबर को सुबह से शाम तक घिसते रहते हैं जबकि अखबार में विविधता रहती है. इसलिए उस अखबार पर विश्वास कीजिए जो सदैव निष्पक्ष रूप से अपने पाठकों के साथ रहा है और आगे भी रहेगा.

शब्द-सागर : डॉ. सागर खादीवाला

CROSS WORD 12034 - डॉ. सागर खादीवाला

बाएं से दाएं

1. भूगर्भ में होने वाली उथल-पुथल से धरती की ऊपरी सतह का हिलना, भूचाल 4. समस्त शब्दों में प्रयुक्त होने वाला नाक का संक्षिप्त रूप 6. पहिया, कुम्हार का बर्तन बनाने का गोल पत्थर 7. सुख या आनंद देने वाला 8. लादने का सामान 10. रुकना, ठहरना, वाक्य में वह स्थान जहां बोलते समय कुछ काल ठहरना पड़ता है 11. रात के समय फूलने वाला एक प्रसिद्ध सुगंधित फूल 14. सुर्ख, रक्त के रंग का 15. तबले आदि पर हथेली का आघात 17. सेवा करने वाली स्त्री 18. कलाई में पहनने का एक आभूषण 20. वह मकान जिसमें किसी महंत के अधीन अन्य साधु रह सकें, देवालय 21. रुई का पौधा, बिनौलों सहित रुई 23. जिसने गुरु से दीक्षा या मंत्र लिया हो 24. जलाशयों में होने वाले पदार्थ, ऐसे पदार्थों पर लगने वाला कर (सं.)

ऊपर से नीचे

1. भूकंप 2. मात्रा (उर्दू) 3. परहेज, उपयुक्त आहार (सं.) 4. नाज, चोचला, बनावटी इंकार 5. एक सदाबहार वृक्ष, डग 7. सुगमता 9. जुकाम (उर्दू) 12. जिसका कंठ नीला हो, एक चिड़िया 13. हल्की वर्षा 16. किसी घर के आसपास का खुला मैदान, मिला-लगा या जुड़ा हुआ (सं.) 19. अनुकृति, अनुकरण (उर्दू) 20. न, नहीं, सम्मति, राय 22. भोजन बनाने की क्रिया, पवित्र

Solution 12033

ज्योतिषाचार्य प्रियंका नारायणशंकर व्यास, कोतवाली बाजार, जबलपुर (म.प्र.)

आज जिनका जन्मदिन है

वर्ष केप्रारंभ में कार्यो की शुरूआत होगी, भूमि भवन आदि का सुख प्राप्त मिलेगा, वर्ष के मध्य में नई योजनाओं पर विचार विमर्श होगा, अधिकारियों के सहयोग से समाज में प्रभाव बना रहेगा, वर्ष के अन्त में आर्थिक कमी केकारण योजनायें वाधित होंगी, शिक्षा में अचानक व्यवधान आयेगा, आकस्मिक यात्रा में व्यय होगा.

मेष और वृश्चिक राशि के व्यक्तियों को भूमि भवन आदि की प्राप्ति होगी, वृष और तुला राशि के व्यक्तियों की नई योजना पर विचार विमर्श होगा, कर्क और सिंह राशि के व्यक्तियों को कार्यो में व्यवधान आ सकता है, मिथुन और कन्या राशि के व्यक्तियों को संयम से काम लेना हितकर रहेगा, मकर और कुंभ राशि के व्यक्तियोंकी आर्थिक उन्नति होगी, धनु और मीन राशि के व्यक्तियों को निजी कार्यो की रूपरेखा बनेगी.

आज जन्मे शिशु का भविष्य

आज जन्म लिया बालक का स्वस्थ्य, सुन्दर, हष्टपुष्ट तथा लंबे कद का होगा. दूसरों का आदर करेगा. किसी भी समस्या का सरलता से समाधान होगा. अंध विश्वासी एवं दूसरों की बात को समझने वाला बहुत चतुर होगा. माता पिता का भक्त होगा.

मेष- आर्थिक मामलों में सूझबूझ व संयम से काम करना लाभदायक रहेगा. मन: स्थिति संतुलित रहेगी. नौकरी में सहयोग रहेगा. पारिवारिक यात्रा होगी.

वृषभ- दिनचर्या व्यवस्थित रहेगी. समय पर कार्य पूरा होने से हर्ष बना रहेगा. राह में आ रही मुश्किलें दूर होंगी. नये संपर्क लाभदायक रहेंगे.

मिथुन- नवीन कार्यो का विस्तार होगा. लाभ के अवसर प्राप्त होंगे. उदर विकार आदि से कष्ट होगा. अनुभवी लोगों का साथ सफ्लता दिलायेगा.

कर्क- मनोरंजन के अवसर प्राप्त होंगे. मांगलिक कार्य में प्रसन्नता रहेगी. राजकीय कार्य बनेंगे. सम्मान वृद्धि होगी. कारोबारी विस्तार की संभावना है.

सिंह- प्रतियोगी परीक्षा में सफ्लता के आसार है. दैनिक कार्यो में अवरोध दूर होगा. आजीविका के प्रयासों में सफ्लता प्राप्त होगी. सुख बना रहेगा.

कन्या- नये लोगों संपर्क, मेलजोल आमोद प्रमोद बढ़ेगा. लेनदेन के मामले सुलझेंगे. आपके कार्यो में लगनशीलता रहेगी. धार्मिक आयोजनों में शामिल होंगे.

तुला- नौकरी में कार्य की अधिकता रह सकती है. कामकाज पेंडिंग में रहेंगे. उठाईगीरों से सावधानी रखें. यश मान-सम्मान प्राप्त होगा.

वृश्चिक- मांगलिक कार्यो की योजना बनेगी. सहयोगी आपकी मेहनत का लाभ उठायेंगे. आजीविका के प्रयासों में सफ्लता मिलेगी. मन में हर्ष बना रहेगा.

धनु- शारीरिक अस्वस्थ्यता रह सकती है, वाहन मशीनरी आदि के प्रयोग में सावधानी रखें. हितचिन्तक सलाह उपयोगी रहेगी. समय का रखें.

मकर- मेहमानों की आवाजाही रहेगी. निजी दायित्वों की पूर्ति होगी. नये कार्यो के लिये किया गया प्रयास सफ्ल होगा. विवादों को टालना हितकर.

कुम्भ- जमीन जायजाद मकान संपत्ति का विवाद सामने आ सकता है. निजी मामलों में सफ्लता मिलेगी. अनावश्यक वाद विवाद से बचें. धैर्य से काम लें.

मीन- कार्यक्षेत्र में समझौता करना लाभकारी रहेगा. नवीन योजना बनेगी. मानसिक संतुष्टि रहेगी. विवादित मसले सुलझने के आसार है.

उदयकालीन ग्रह चाल

पंचांग

रा.मि. 05 संवत् 2082 आश्विन शुक्ल पंचमीं शनिवासरे दिन 8/46, अनुराधा नक्षत्रे रात 11/7, प्रीति योगे रात 11/3, बालव करणे सू.उ. 6/3, सू.अ. 5/57, चन्द्रचार वृश्चिक, शु.रा. 8, 10, 11, 2, 3, 6 अ.रा. 9, 12, 1, 4, 5, 7 शुभांक- 0, 3, 7.

व्यापार भविष्य

आश्विन शुक्ल पंचमीं को अनुराधा नक्षत्र के प्रभाव से चांदी, तांबा, पीतल, सन् हैसियन, जूट, पाट, बारदाना, कपास, के भाव में मंदी होगी उपर लिखी वस्तुओं मे यदिं तेजी होगी. तब आगे दिन में भी तेजी का रूख बना रहेगा. लालमिर्च, अरहर, मूँग, मोठ, में नरमी रहेगी. भाग्यांक 3532 है.

SUDOKU 7166

	8			6				
					5			
		9				7		3
	1			8				2
			7		4			
6				3			8	
5		7				4		
			8					
				1			6	

■ प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक है. इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है. आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 333 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें. ■ पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते. ■ पहेली का केवल एक ही हल है.

नवभारत सू-डोकू 7165

9	4	5	3	1	8	7	6	2
1	8	6	7	2	5	4	9	3
2	7	3	9	4	6	8	1	5
6	3	9	1	7	4	2	5	8
5	2	4	8	9	3	6	7	1
7	1	8	6	5	2	9	3	4
4	6	7	5	8	1	3	2	9
8	9	1	2	3	7	5	4	6
3	5	2	4	6	9	1	8	7